M – 2020 PAPER

इतिहास

(1)

(A) सुरकोटदा :- सिंधु घाटी सभ्यता से संबंधित स्थल है
- वर्तमान पाकिस्तान में स्थित है
- यहाँ से किले का साक्ष्य मिला है।

(B) शतपथ ब्राह्मण :- प्राचीन इतिहास में ऋग्वेद के बाद शतपथ ब्राह्मण का महत्वपूर्ण स्थान है।
- इसमें स्त्री को पुरुष का अर्धांगिनी कहा गया है।

(C) चार्य आर्य सत्य :- बौद्ध धर्म मे चार आर्य सत्य का वर्णन है
(i) दुख (ii) दुख समुदाय (iii) दुख निरोध
(iv) दुख निरोध गामिनी प्रतिपदा

(D) इक्ष्वाकु वंश :- वैदिक काल का एक प्रमुख वंश जिससे भगवान "राम" का संबंध माना जाता है
- इस वंश के शासक पुरुकुत्स से नर्मदा (रेवा) का विवाह हुआ था।

(E) नागभट्ट प्रथम : गुर्जर प्रतिहार वंश का शासक था
- राजधानी - कन्नौज

(F) तुजुक -ए- जहाँगीरी :- जहाँगीर की आत्मकथा
- मुतामिद खाँ ने इसे पूर्ण किया था।

(G) अमीर अली बरीद :-

(H) दीवान-ए-कोही :- कृषि विभाग
- इसकी स्थापना मुहम्मद बिन तुगलक ने की थी

(I) सुगोली की संधि :- ईस्ट इंडिया कंपनी तथा नेपाल के राजा के बीच हुई एक संधि थी
• यह ब्रिटेश-नेपाली युद्ध जो लगभग (1814 ई-16 ई. तक चला के बाद अस्तित्व में आई।

(J) देवबंद आंदोलन :-
- इस्लाम की एक मुख्य विचार धारा है)
- इसमें शरियत के पालन पर बल दिया जाता है)

(K) मदन लाल धींगरा :- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक मुख्य क्रांतिकारी इनका जन्म 1883 ई. में पंजाब में हुआ था।
- "कर्जन वायली" नामक ब्रिटिश अधिकारी की गोली मारकर हत्या कर दी थी
- मृत्यु लंदन में हुई थी।

(L) 20 फरवरी 1947 एटली की घोषणा :-
- ब्रिटेन में चुनाव के दौरान इन्होंने घोषणा की थी कि अगर इनकी सरकार बनी तो भारत से ब्रिटिश उपनिवेश का अंत कर दिया जाएगा।

(M) मार्कोपोलो :- यह इटली का व्यापारी व खोजकर्ता थी
- इसने भारत के "पांड्य राज्य" की यात्रा की थी

(N) रिपोर्ट ऑफ ला :- फ्रांसिसी विचारक मोंटेस्क्यू के द्वारा रचित पुस्तक है)

DATE
PAGE

(1) लॉयाड जोर्ज —

(2)
(A) सिंधु घाटी सभ्यता प्राचीनतम सभ्यताओ मे से एक है। यह भारतीय उपमहाद्वीप मे प्रथम नगरीय क्रान्ति को दर्शाती है। यह कास्य युगीन सभ्यता थी, C14 कार्बन डेटिंग के आधार पर इस सभ्यता का काल 2500 ई.पु से 1750 ई.पु. माना जाता है।

- इनका आर्थिक जीवन उन्नत था —
- कृषि अधिशेष होता था। जिससे ग्रामीण व नगरीय व्यवस्था सुचारु रूप से चलती थी।
- वस्तु विनिमय प्रणाली के प्रचलन की जानकारी मिलती है।
- शिल्प व उद्योग विकसित तथा उन्नत अवस्था में थे मृदभाण्ड, मनके आदी के साक्ष्य विभिन्न स्थलों से प्राप्त हुए है।
- मेसोपोटामिया अभिलेख से ज्ञात होता है कि सैन्धव वासियो के वाणिज्यिक संबंध दिलमन व मकरान से भी थे
- ~~भारी मात्रा~~ मे महरों के साक्ष्य मिले है।

2 (B) उत्तर वैदिक काल का समय लगभग 1000 ई.पू से 600 ई.पू तक माना जाता है। उत्तर वैदिक काल के समय में ग्रामीण संस्कृति का उद्भव दृष्टिगोचर हुआ है।

- धार्मिक स्वरुप लौकिक होता ~~था~~ ~~रह~~ गया
- देवी-देवताओ के पुजा की जाती थी।
- वर्ण व्यवस्था का जन्म इसी समय हुआ।

- यजुर्वेद सामवेद आदि वेदों की रचना इसी समय हुई।
- कर्मकाण्ड की शुरुआत।
- जीवन को संस्कारों में बांध दिया गया।
- पुनर्जन्म की अवधारणा का विकास हुआ।

अतः देखा जा सकता है उत्तरवैदिक काल में वैदिक काल की जनजातीय संस्कृति आवश्यकता अनुसार धर्म का प्रयोग व आचरण करती है।

(c) "अशोक" मौर्यकालीन महान शासक थे जिनका सम्पूर्ण इतिहास "अभिलेखों" से प्राप्त हुआ है। अतः यह अभिलेख अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- इनसे इतिहास की सत्य घटनाओं के प्रमाण प्राप्त हुए।
- अशोक के काल की सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक व्यवस्था की जानकारी प्राप्त होती है।
- यह विभिन्न स्थानों में भिन्न-भिन्न लिपियों में लिखे गए, जिससे वहाँ के जन समुदाय की जानकारी प्राप्त होती है। जैसे भारत में मिले अधिकांश अभिलेख ब्राह्मी लिपि में प्राप्त हुए हैं।
- अशोक के महान शासक होने की पुष्टि होती है। जैसे उसने एक अभिलेख में सभी "मनुष्यों को अपनी संतान कहा है"।

अशोक कालीन अभिलेख महत्वपूर्ण व ऐतिहासिक स्रोत के रूप में उभरते दिखते हैं।

(E) राजेन्द्र चोल की उपलब्धियाँ :- चोल राजवंश का सबसे महान शासक था।
उसने अपनी महान विजयों द्वारा चोल साम्राज्य का विस्तार कर उसे दक्षिण भारत का सर्व शक्तिशाली साम्राज्य बनाया। उसने 'गंगई कोंड' की उपाधी धारण की तथा गंगई कोंड चोलपुरम् नामक नगर की स्थापना की।

(F) अलाउद्दीन खिलजी, खिलजी वंश का प्रमुख शासक था। इसका कार्यकाल (1296 से 1316 ई) तक माना जाता है।
अलाउद्दीन खिलजी के दक्षिण अभियान —
- अलाउद्दीन सलतनत का पहला शासक था जिसने दक्षिण अभियान प्रारंभ किया था
- तथा मलिक काफूर को सेनापति नियुक्त किया था।
- जिन शासकों ने अधीनता स्वीकार की उनके साथ मित्रता तथा जिन्होंने नहीं स्वीकार की उनके साथ कठोर नीति का पालन किया था
- अलाउद्दीन खिलजी की दक्षिण विजय की जानकारी का प्रमुख स्त्रोत बरनी के "तारीख - फिरोजशाही" है।
- प्रमुख दक्षिण राज्य जिन पर अलाउद्दीन ने विजय प्राप्त की —
(a) देवगिरी, वारंगल, द्वारसमुद्र, माबर आदि थे।
अलाउद्दीन ने दक्षिण के राज्यों पर प्रत्यक्ष शासन नहीं किया था।

(G) मुगल कालीन दक्षिण नीति —
भारत में मुगल शासन की स्थापना का श्रेय बाबर को जाता है। जिसने 1526 ई० के

पानीपत युद्ध को जीतकर दिल्ली पर अपना अधिकार स्थापित किया।
- विभिन्न मुगल शासकों ने दक्षिण के राज्यों पर शासन की भिन्न-भिन्न नीतियों का अनुसरण किया।
- प्रारंभिक मुगल शासकों ने अप्रत्यक्ष रूप से दक्षिण के राज्यों पर शासन किया था।
- अकबर ने 1601 ई. में अंतिम बार अपना अंतिम अभियान खानदेश के विरुद्ध किया था।
- अधिकतर मुगल शासकों ने उत्तर भारत पर ही शासन किया था।

(H) 14वीं शताब्दी के मध्य में भारत के मध्य क्षेत्र में शक्तिशाली मराठा साम्राज्य की स्थापना हुई। जिसके प्रसिद्ध शासक शिवाजी का जन्म 1627 ई. में शिवनेर के किले में हुआ था।

मराठा साम्राज्य के निर्माण में शिवाजी का योगदान —
- मराठा शक्ति को संगठित किया।
- मराठावाद की भावना जाग्रत की।
- समकालीन परिस्थितियों को समझते हुए स्थानीय लोगों के मध्य अपनी लोकप्रियता बढ़ाई।
- मराठा साम्राज्य का निर्माण किया और मराठा शक्ति को प्रभावशाली रूप दिया।

शिवाजी ने मराठा साम्राज्य को मजबूत आधार प्रदान किया।

(I) लार्ड विलियम बेंटिक, भारत के प्रथम गवर्नर जनरल थे इनका कार्यकाल लगभग (1828 से 1835) ई. तक माना जाता है।

इनके द्वारा किए गए प्रमुख कार्य —

- राजाराममोहन राय के सहयोग से 1829ई. में सती प्रथा को समाप्त किया।
  ठगी प्रथा को समाप्त किया।
- इसी के समय "मैकाले" की अनुशंसा पर अंग्रेजी शिक्षा को प्रधानता दी गई थी।
- शिशु बालिका की हत्या पर प्रतिबंध लगाया। आदि।

अतः देखा जा सकता के इसके समय में विभिन्न समाज सुधार के कार्य हुए।

(7) औद्योगिक क्रान्ति के सामाजिक परिणाम

औद्योगिक क्रान्ति का तात्पर्य उत्पादन प्रणाली में आमूल-चूल परिवर्तन है जिसमें हस्त शिल्प के स्थान पर यंत्रों (मशीनों) का उपयोग किया गया।

औद्योगिक क्रान्ति के सामाजिक परिणाम :-

- कृषि के क्षेत्र में क्रान्ति हुई।
- खाद्य उत्पादों की उपलब्धता सबके लिए सुनिश्चित हुई।
- स्वास्थ्य सेवाओं तथा वैज्ञानिक क्षेत्र में नए अविष्कार किए गए
- पारम्परिक सामाजिक ढाँचे के स्थान पर एक नई सामाजिक संरचना का जन्म हुआ।

(8) 1688 ई. की गौरवपूर्ण क्रान्ति इतिहास में एक अभूतपूर्व घटना है जिसमें निरंकुश राजतंत्र की परंपरा बिना रक्त की बूंद बहाए समाप्त हो गई।

इसी कारण इस घटना को "रक्तहीन क्रान्ति" या वैभव पूर्ण - महान - क्रान्ति भी कहा जाता है।

महत्व :—

- यह एक युग निर्माण- कारी घटना सिद्ध हुई जिसके कारण संसद में (बिल - ऑफ - राइट्स) पारित हुआ।
- संसद की शक्ति में वृद्धि हुई।
- न्यायपालिका को स्वतंत्रता मिली।
- राजा की शक्तियों को कम किया गया।
- धार्मिक सहिष्णुता में वृद्धि हुई आदि।

3 (A) फ्रांसीसी क्रान्ति 1789 ई. में हुई जो निरंकुश व स्वेच्छाचारी सत्ता के विरुद्ध एक क्रान्ति थी। जिसके मूल में असमानता और भेदभाव पर आधारित सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था विद्यमान थी। इस क्रान्ति ने संपूर्ण विश्व में स्वतंत्रता, समानता, एवं बंधुत्व पर आधारित मापदंडों को प्रसारित किया।

क्रान्ति के प्रभाव —

(1) राजनीतिक दृष्टि से फ्रांस की राजव्यवस्था में बूर्वा वंश का अंत व नए शासन का उदय हुआ।

- सामाजिक व्यवस्था में समानता आई।
- विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग की समाप्ति हुई।
- मध्यवर्ग को समाज में यथोचित सम्मान प्राप्त हुआ।
- चर्च की सम्पन्नता व सर्वोच्चता में गिरावट
- धर्मनिरपेक्षता स्वतंत्र विचार धारा के रूप में स्थापित हुई।

- प्रशासन व्यवस्था में बड़े स्तर पर सुधार हुआ फ्रांस को डिपार्टमेंट्स में विभक्त कर दिया गया था।

— इस क्रान्ति के नकारात्मक प्रभाव भी दृष्टिगोचर हुए जैसे —
- युद्ध से अराजकता व अशांति उत्पन्न हुई।
- सैन्यवाद और अधिनायकवाद को समर्थन प्राप्त हुआ।
- बड़ी मात्रा में रक्तपात हुआ।

— क्रान्ति का अन्य देशों पर प्रभाव हुआ :
- भारत के संविधान में भी स्वतंत्रता समानता व बंधुता का सिद्धांत फ्रांस की क्रान्ति से प्रेरित होकर लिया गया है।
- सम्पूर्ण यूरोप इस घटना से प्रभावित हुआ।
- अन्य देशों में जन-आंदोलन प्रारम्भ हुए।

— क्रान्ति का शाश्वत प्रभाव :—
- क्रान्ति का मूल-मंत्र "स्वतंत्रता - समानता व विश्वबंधुत्व" सभी देशों में तेजी से फैला।
- जनता में जागरूकता आई।
- मानवाधिकारों के घोषणापत्र से लोगों में मानवाधिकारों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ी।
- मताधिकार के सिद्धांत का प्रचलन हुआ।

अतः वर्तमान में भी फ्रांस की क्रान्ति की प्रासंगिकता दृष्टिगोचर होती है।

(c) गुप्तकालीन समाजिक व्यवस्था जटिल संरचना पर आधारित थी।
- ब्राह्मणवादी व्यवस्था का पुनरुत्थान इस काल में देखने दिखता है।
- विभिन्न पेशेवर समूहों का जाति के रूप में परिवर्तन हुआ तथा उपजातियों का विकास हुआ।
- ब्राह्मणों का सर्वोच्च स्थान था जो अध्ययन
- अध्यापन, यज्ञ करते थे। तथा अन्य व्यवसाय भी अपना सकते थे
- शूद्रक की 'मृच्छकटिकम्' से इस समय की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।
- वैश्यों का मुख्य कार्य कृषि व व्यापार-वाणिज्य था।
- ब्राह्मणों के बाद दूसरा स्थान क्षत्रियों का था।
- शूद्रों का स्थान सबसे नीचे था
- वर्ण व्यवस्था का निर्धारण कर्म के आधार पर किया जाता था।
- महिलाओं को आदर्श रूप में चित्रण हुआ।
- दास प्रथा का प्रचलन था।
- देवदासी व सती प्रथा के साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं।

(f) अकबर एक महान सम्राट माना जाता है क्योंकि इसने अपने राज्यक्षेत्र की जनता को
- सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक एकता से परिचित कराया व एक सूत्र में पिरो दिया था।
- राज्यसिंहासन पर आसीन होकर अकबर ने भारत के विशाल भू-भाग पर राजनीतिक एकता स्थापित की
- धार्मिक एकता - अकबर ने धार्मिक सहिष्णुता की नीति का पालन किया। तथा इसके लिए

दीन-ए-इलाही नामक नए धर्म की स्थापना की।

- आर्थिक एकता - व्यापार-वाणिज्य की ओर भी अधिक ध्यान दिया। जिससे आंतरिक व विदेशी व्यापार प्रोत्साहित हुआ।
- सांस्कृतिक एकता स्थापित की। विभिन्न ग्रंथो का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद कराया।

इस तरह, अकबर ने भारत में राष्ट्रीय चेतना जगाने में पूर्ण सफलता प्राप्त की इसलिए अकबर को एक महान सम्राट कहा जाता है।